प्रस्तावना

पं० दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे राजनीतिक चिंतक हैं, जिनका सम्पूर्ण जीवन और राजनीतिक चरित्र उनके कर्त्तव्य और विचार–चिंतन में समाहित हैं। उनका सम्पूर्ण राजनीतिक चिंतन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक तथा भारतीय जनसंघ के महामंत्री व अध्यक्ष के नाते विकसित होता है। वे व्यवहारिक राजनीतिक चिंतक थे। वे प्लेटो, अरस्तू या रूसो की तरह ‘युरोपियायी’ चिंतक नहीं थे। उन्होंने अपने राजनीतिक चिंतन को भारतीय भूमि पर व्यवहार करने का प्रयास किया। दीनदयाल जी ‘पराक्रमवादी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी’ हैं। वे अपने राजनीतिक चिंतन के विस्तार में ‘हिन्दू राष्ट्रवाद’ का प्रासाद खड़ा करते हैं। ‘एकात्म मानव दर्शन’ उनके राजनीतिक चिंतन का परिणाम है।

दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक चिंतक भी थे, कर्तृव्यवादी व्यक्तिवादी के पूर्णता के प्रतीक भी थे। वे स्वतंत्रता आन्दोलन से आभामंडित हुए। स्वतंत्रता भारत में एक विरोधी दल को प्रखरतापूर्वक स्थापित कर लोकतंत्र की सम्पूर्णता को प्रगट करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। स्वतंत्र भारत में नेहरू के चमत्कारिक व्यक्तित्व और गाँधीवाद के सामने किसी अन्य विचार धारा को स्थापित करने का प्रयास भी एक दुर्घर्ष चुनौती वाला कार्य था। लेकिन दीनदयाल जी ने यह चुनौती स्वीकार ही नहीं की बल्कि एक वैकल्पिक राजनीतिक चिंतन की स्थापना का कार्य सफलतापूर्वक किया। दीनदयाल के युग में भारतीय राजनीतिक चिंतन का विकास कांग्रेस के राजनैतिक एकाधिकार की छत्रछाया में पल्लवित पुष्पवित हुआ। उस समय भारतीय चिंतन के रूप में नेहरूवाद, मार्क्सवाद और उग्र–गाँधीवाद था। इस स्थिति में भारतीय चिंतन को स्थापित करने का साहस दीनदयाल उपाध्याय ने किया।

सरदार बल्लभ भाई पटेल की मृत्यु के बाद भारत में नेहरूवाद को चुनौती देने वाला कोई चिंतन नहीं था। पश्चिमी उद्योगवाद, सेक्युलरिज्म या धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, नेहरूवादी समाजवाद, मार्क्सवाद, प्रगतिशीलतावाद के आवरण में भारतीय चिंतन की विरोधी विचाराधारायें नेहरूवादी चिंतन के आभामंडल की छत्रछाया में खूब पल्लवित हो रही थी। वास्तव में ये सभी विचारधारायें नेहरूवाद का ही अंग हैं। एक समय तो ऐसा था कि नेहरूवाद और मार्क्सवाद समानान्तर रूप से भारत में विकसित होने लगे। ‘जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय का माडल’ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह सभी भारतीय चिंतन की मुख्य धारा बन गये। तत्कालीन समय में इस विचार प्रक्रिया को चुनौती देने वाला कोई नहीं था। पं० दीनदयाल ने इस चुनौती को स्वीकार किया। वे अखण्ड भारत धर्मराज्य, विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था, राष्ट्रवाद, व्यष्टिवाद, समष्टिवाद, एकत्मवाद को लेकर राष्ट्र के समक्ष उपस्थित हुए। दीनदयाल ने अपने चिंतन को ही प्रस्फुरित नहीं किया बल्कि उसको क्रियान्वित कर सकने वाला सुसंगठित राजनीतिक दल, भारतीय जनसंघ को विकसित करने का सफल प्रयास किया।

पं० दीनदयाल को यह पता था कि अखण्ड भारत और धर्मराज्य का विचार नेहरू के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद और पूँजीवादी शान्तिवाद का शिकार है। इसमें एकत्मवादी राष्ट्रवाद का बोध नहीं है। कश्मीर–आन्दोलन, बेरुबाड़ी–हस्तान्तरण के खिलाफ जन–आन्दोलन, गोवा मुक्ति आन्दोलन, चीन के तिब्बत प्रवेश का विरोध, कच्छ करार का विरोध, वाशकन्द समझौते का विरोध, उपेक्षित सुरक्षा नीति का विरोध, पाकिस्तान के साथ बरती जाने वाली तुष्टिकरण का विरोध कर दीनदयाल ने नेहरू के वैचारिक खोखलेपन पर अखण्ड राष्ट्रवादी हमला किया। व्यावहारिक रूप से 1962 के चीनी आक्रमण और 1965 में पाकिस्तान से हुए युद्ध में भारतीय दैन्यता के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने के कारण पं० दीनदयाल की वैचारिकी को राष्ट्रीय क्या अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति मिली। 1967 में हुए निर्वाचन के परिणाम से पं० दीनदयाल उपाध्याय के 'कांग्रेस मुक्त भारत' की अवधारणा को बल मिला।

पं० दीनदयाल के राजनीतिक चिंतन की पूर्णता उनके आर्थिक चिंतन के बिना अपूर्ण है। पं० दीनदयाल कोई अर्थशास्त्री नहीं थे। लेकिन उनका स्वदेशीपन आज समय की आवश्यकता है। आज 'मेक इन इण्डिया' और 'इण्डिया फर्स्ट' जैसी अवधाराणायें दीनदयाल के चिंतन पर आधारित हैं। 'विमुद्रीकरण' और 'जी.एस.टी.' राष्ट्र का एकीकरण ही है। 'स्वर्णिम चतुर्भुज योजना' राष्ट्र का एकत्व हैं पं० दीनदयाल ने पाश्चात्य औद्योगीकरण और उसका लोकतांत्रिक समाजवादी स्वरूप, पूँजीवादी औद्योगीकरण में छिपे केन्द्रीयकरण की प्रकृति का विरोध किया यह आरोपित औद्योगीकरण है। यह लोककलाओं, परम्परागत वैज्ञानिक विधियों और भारतीय शिल्प पर आक्रमण है। मशीन मानव पर हावी न हो, उत्पादन उपभोगवाद से ग्रसित हो, लोक सहभागात्मक सहज विकास हो, बिचौलियों को बढ़ावा देने वाली विपणन व्यवस्था न हो, यह उनके आर्थिक चिंतन का आधार है। 'प्रत्येक को वोट' उनका राजनैतिक लोकतंत्र के प्रति समर्पण है। 'प्रत्येक को काम' उनके आर्थिक लोकतंत्र का मानदण्ड हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय के राजनैतिक चिंतन को प्रस्तुत करने का यह पुस्तक संक्षिप्त प्रयास है पुस्तक को उनके विचारों से संयोजित किया गया है। पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय, पं० दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व है। इस अध्याय में उनके व्यक्तित्व के पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। दूसरा अध्याय युग और समस्यायें हैं। पं० दीनदयाल के युग में क्या भारतीय समस्यायें थीं युग की क्या स्थिति थी, भारतीय वैचारिक की किसी समस्याओं से प्रेरित होकर दीनदयाल ने अपने मौलिक चिंतन का प्रतिपादन किया ? इसका विश्लेषण किया गया है। तीसरे अध्याय में पं० दीनदयाल उपाध्याय के राजनैतिक चिंतन के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण है। इस अध्याय से दीनदयाल उपाध्याय के राजनैतिक चिन्तन की रूपरेखा का पता चल जाता है। चौथे अध्याय में पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन का विश्लेषण है। एकात्म मानव दर्शन दीनदयाल उपाध्याय का मौलिक चिंतन है। वस्तुतः यह चिंतन कोई नया चिंतन नहीं है। सनातन भारतीय चिंतन का समयानुकुल

प्रयोग है, जो वैश्विक है। दीनदयाल ने इस चिंतन को विश्व मानव के सन्दर्भ में प्रतिपादित किया। इसे उन्होंने भारतीय चिंतन की मौलिक पराकाष्ठा बताया। एकात्म मानव दर्शन का आधार सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। पाँचवें अध्याय में राष्ट्रीय स्वयं संघ के अनुषांगिक संगठनों के निर्माण में दीनदयाल के वैचारिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय स्वयम् सेवक संघ के अनेक अनुषांगिक संगठन हैं, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हैं। सभी अनुषांगिक संगठनों का वैचारिक अनुष्ठान है। सभी की वैचारिकी का निर्माण पं० दीनदयाल ने किया। छठे अध्याय में, भारत के वैकल्पिक राजनीतिक दल के संगठन कार्य के रूप में पं० दीनदयाल का व्यावहारिक राजनीतिक सिद्धान्त का विश्लेषण है। दीनदयाल ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त को कार्य रूप में जनसंघ के रूप में एक राजनैतिक दल की कार्य–प्रक्रिया और सिद्धान्त का निर्माण किया। भारतीय जनता पार्टी का आज का उत्थान–विकास और यात्रा पं० दीनदयाल उपाध्याय के पद चिन्हों पर ही विकसित हो रही है।

इस पुस्तक के प्रकाशक श्री विशाल मित्थल के हम ऋणी हैं। जिनकी यदि कृपा न होती तो इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव न होता। अन्त में हम इस सम्पादित पुस्तक को भारत के अन्मान्य राष्ट्रवादी विचारकों को समर्पित करते हैं।

अगस्त **प्रो० कौशल किशोर मिश्र**
2017 **डॉ० शिवाली अग्रवाल**